Shodhshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
© 2019 SHISRRJ | Volume 2 | Issue 1 | ISSN : 2581- 6306

संताली भाषा साहित्य

डॉ. धनेश्वर मांझी
सहायक प्रोफेसर, संताली विभाग, भाषा भवन, विश्वभारती, शांतिनिकेतन, पश्चिम बंगाल।

संताल :–''संतालों का उद्भव और विकास के सम्बन्ध में कहा जाता है कि संतालों का जन्म 'हिहिड़ी–पिपिड़ी' देश में हुआ है। इनकी पौरानिक लोक कथाओं के अनुसार 'हिहिड़ी–पिपिड़ी' में मानव के पूर्वज पिलचू हड़ाम एंव पिलचू बुड़ही का जन्म स्थल है।''[1]

संताल की आदि खेरवाड़, खेरवाड़ की आदि होड, प्रजाति आदि मानव देवी ठाकरान देवता ठाकर के द्वारा हुई है। आकाश लोक में ठाकरान के द्वारा दायें एंव बांयेहांस की हड्डी से दो हांस हांसिन बनायी गयी थी। जोदायेंहांस की हाड्डी से बने थे वे मादा हुए और जोबांये हांस की हड्डी से बने थे वे नर हुए। एक हांस एंवएक हांसिन (हांसली) में ठाकरान के जिद करने परठाकुर जी ने हांस हांसिन में फूंक (ऑड.) कर प्राण भारदिये। हांस हासिन दोनों आकाश लोक में उडने लगे एवजलाकार समंदर के बीच में बैठते, तैरते। हांस हासिन केदो अण्डे से दो बच्चे, संताल (होड, खेरवाड) आदि मानव(मानमी) पिलचू हाडाम एवं पिलचू बुड़ही की उत्पति हुई। इन दोनों के सात लडके एंव सात लडकियां पैदा हुई। इनलोगों को इन लोगो के बीच विवाह सूत्र में बंघते हैं औरसात गोत्र हुई। बाद में किसी कारणवश और पांच गोत्रोंका निर्माण हुआ।। कुल मिलाकर बारह गोत्र से संतालजाति, समाज, संस्कार संचालित होती है।

संताली भाषा :– ''मनुष्य सामाजिक प्राणी है। समाज में रहने के नाते उसे आपस में सर्वदा ही विचार–विनिमय करना पड़ता है। कभी वह शब्दों या वाक्यों द्वारा अपने आपको प्रकट करता है तो कभी सिर हिलाने से उसका काम चल जाता है।''[2] संताली भाषा संतालों की मातृभाषा है।Data Security.

संताली भाषा आग्नेय या आस्ट्रिक भाषा परिवार की महत्वपूर्ण भाषा है। आग्नेय भाषा परिवार भारत के आदिवासियों की सबसे बडी शाखा है। संताली भाषा भारत के संताल नाम से अभिहित आग्नेय वंशी या प्रोटो आस्ट्रोलायड प्रजाति की मातृभाषा है। संताल से संताली भाषा का व्युत्पन्न है। संताली भाषा की उत्पति दैवीशक्ति से हुई है। संताली भाषा की उत्पति का समय काल निश्चित रूप से नहीं कहा जा सकता। इतना निश्चित कहा जाता है कि लोक में देवी–देवताओं द्वारा जिस भाषा का प्रयोग करते थे, यही भाषा थी। संताली भाषा का कोई प्राचीन लिखित रूप नहीं मिलता है। लेकिन यह कहा जा सकता है कि प्राचीन काल से ही मौखिक श्रुति परम्परा से ही यह आज तक जीवित है।

प्राचीन सभ्यता मोहनजोदड़ो, हड़प्पा के कुछ शिलालेखों में संतालों के पूजा कर्मकांड (पुजा खोंड) तथा भित्ती चित्र से यह अनुमान किया जा रहा है कि संतालों की आदियुग में निश्चित रूप से अपनी लिपि रही थी। प्राचीन काल में संताल लोग अपने आपको होड़ कहते थे। मध्यकाल में खेरवाड़ । होड़ का अर्थ आदमी और खेरवाड़ का अर्थ अखेटी। संत, सामंत एवं समतल से संताल की उत्पति मानी जाती है।

आस्ट्रिक या आग्नेय भाषा दो भाषा परिवारों में विभक्त है।

1. आस्ट्रो एशियाटिक भाषा परिवार।
2. आट्रोनेटिक भाषा परिवार।

Received : 05 Jan 2019 | Accepted : 25 Jan 2019 | January-February 2019 [2 (1) 347-351]

1. आस्ट्रो एशियाटिक भाषा परिवार के अन्तर्गत संताली, मुंडारी, हो, खड़िया, भूमिज, करमाली, महली. कुर्कु, जुवांग, सबर, गदवा, सोरा, गोरू, गुनोव आदि है, ये पश्चिम क्षेत्र की भाषाएं कही जाती है तथा निकोबारी, ल्पउगंख्मेर, खासी, वा, रिवड लावा, मोन खमेर, वहनार, से, मलतो, सेकई, जाकुद, सेमोंग आदि पूर्वी क्षेत्र की भाषाएं कही जाती है।

2. आस्ट्रोनेटिक भाषा परिवार के अर्न्तगत इंडोनेशिया, माईकोनेशिया, पौलेनिशिया आदि हैं। ये भाषाएं पूर्वी द्वीपों में बोली जाती है।

क्षेत्र – संताली भाषा का क्षेत्र बड़ा ही विस्तृत है। उतर में नेपाल से दक्षिण में उड़ीसा तक तथा पूरब में असम से लेकर पश्चिम में उत्तर प्रदेश एवं मध्य प्रदेश के प्रान्तों में फैला हुआ है। संताली भाषा के बोलने वाले सघन रूप से झारखंड, बिहार, उडीसा, पश्चिम बंगाल एवं असम प्रान्तों में पाये जाते हैं। भारत के अलावे नेपाल, भूटान, बांग्लादेश, मॉरिशस तथा त्रिनिदाद आदि देशों में भी संताली भाशा बोली जाती है। सम्पूर्ण भारत में संताली भाषा–भाषियों की संख्या लगभग दो करोड़ से भीअधिक है। कुल जनजाति की आबादी का यह पचासप्रतिशत हैं। संताल जनजाति को भारत सरकार नेअनुसूचित जनजाति के अन्तर्गत रखा है। अंगरेजउपनिवेशवादियों ने भी अपने साम्राज्य विस्तार के कममें इन्हें हिलट्राइब के नाम से परिभाषित किया है। अबअग्नेय भाषा भाषियों को देशज एवं आदिवासी कहाजाने लगा है।

भारत के वन, जंगल, पहाड़, पर्वतीय क्षेत्रों में निवासकरने वाले संताल आदिवसियों के जीवन तथा समाज मेंअनेक बदलाव हुए हैं। नई राजनीतिक गतिविधियों, चुनौतियों और अन्य सांस्कृतिक प्रभावों से संताली परम्परातथा भाषा– संस्कृति में बदलाव दिखलाई पड़ रहा है।उनके लोक साहित्य में लोकगाथा, लोककथा, बिनती,बांखेंड़, गीत, मुहावरे, लोकोक्ति आदि आते हैं इनकहानियों में तथा गीतों में इनके परम्परागत विश्वास,आस्था, धर्म, आदि का वर्णन मिलता है। इनकी भाषाशैली सरल एवं मधुर हैं।

संताली साहित्य :– ''साहित्य को अंग्रेजी में 'लिटरेचर' कहा जाता है। यह शब्द 'लेटर अर्थात 'वर्ण' से बना है। इसका अर्थ हुआ, जहाँ वर्ण है वहाँ साहित्य है। चाहे वह मौखिक हो या लिखित हो।''[3]

संताली साहित्य का उद्‌भव और विकास के सम्बन्धमें जब अध्ययन किया जाए जो हम पाते हैं कि संतालीसाहित्य दो भागों में विभाजित किया जा सकता है।पहला लोक साहित्य तथा दूसरा लिखित साहित्य।लोक साहित्य में लोक जीवन के भावों, विचारों औरघटनाओं के मौखिक विषय हैं। संताली भाषा में लोकशब्द का अर्थ है होड़। जिससे सभी मानव जाति काबोध होता है। लोक साहित्य या होड़ सांवहेंत का अर्थहै लोगों का साहित्य । लोक साहित्य में लोक गाथा,लोक कथा, लोक गीत, पहेलियां, कहावतें, मुहावरे,संगीत, आदि आते हैं। संताली लोक साहित्य, लोकसंस्कृति का एक अंग है। श्रुति रूप में युगों से संतालीलोक जीवन में चले आ रहे है। इसलिए लोक साहित्यअलिखित साहित्य है। लोक साहित्य की कुछ संकलित,सम्पादित, संग्रहित, पुस्तकें विदेशी एवं देशी विद्वानों नेप्रकाशित की है।

संताली साहित्य का दूसरा भाग है शिष्ट साहित्यया लिखित साहित्य। संताली शिष्ट साहित्य के अंतर्गतकविता, कहानी, उपन्यास, नाटक, आलेख, आदि आतेहै। आधुनिक युग के लेखकों तथा कवियों द्वारा रचित्विभिन्न विधाओं में शिष्ट साहित्य रचते है। इसलिए इसेलिखित साहित्य कहते है।संताली साहित्य का विकास क्रम तीन कालों मेंविभजित किया जाता है।

1. आदिकाल – आदिकाल या प्राचीन काल कासाहित्य 1852 ई. के पूर्व का माना जाता है।आदिकाल का साहित्य अलिखित लोक साहित्य(आद ओक्तो श्होड़ थुति सॉवहेंत) लोक साहित्य(संताली थुति सॉवहेंत) कहते हैं। इस काल मेंसंतालों को होड़ नाम से पारिभाषित किया जाताथा, इसलिए इस काल को लोक युग या होड़ओबोतार कहते है।

2. मध्य काल – मध्यकाल (ताला ओकतो) का साहित्य सन् 1852 ई. से सन् 1936 ई. का माना जाता है।इस काल को संताली लिखित साहित्य का प्रारम्भकाल कहा जाता है। इस काल में संतालों कोखेरवाड़ नाम से परिभाषित किया जाता था। इसलिएमध्यकाल के साहित्य को खेरवाड़ साहित्य कहतेहैं। इस काल को खेरवाड़ ओबोतार या खेरवाड़युग कहते हैं। श्संताली लिखित साहित्य 17वींशताब्दी में विदेशी विद्वानों द्वारा लिखितश (संतालीओल सॉवहेंत् 17 वीं शताब्दी रे विदेश साहेब कोहोते ते') है। इस मध्यकाल के साहित्य कोश्समालोचना साहित्य' (तुलाउ सॉवहेंत) कहते हैं।

3. आधुनिक काल– आधुनिक काल (नाहाक् ओक्तो)का साहित्य सन् 1936 ई. से अबतक का मानाजाता है। इस काल में ही संताल जाति को संथालया सांवताल कहा जाता है। इस काल को सांनताड़ीकाल कहते हैं। इस काल के साहित्य को पूरा पूरीसंताली लिखित साहित्य (संताली ओल सॉवहेंत)कर कर काल कहा जा सकता है। इस काल केसंताली साहित्य में दो रूपों में लिखी जा रही हैं क.लोक साहित्य (होड़ सॉवहेंत) ख. शिष्ट सॉवहेंत।

संताली लोक साहित्य– ''लोक साहित्य शब्द दो शब्दों के योग से गठित हुआ है – 'लोक' और 'साहित्य'। इसका अभिप्राय यह लिया जा सकता है कि लोक का साहित्य अथवा लोक–जीवन में प्रयुक्त साहित्य, जिसका सृजन स्वंय लोक द्वारा हुआ हो।''[4]

संताली लोक साहित्य, लोक जीवन का दर्पण है।इनके गीत, कहानी, कथा, गाथा, मुहावरे, लाकोक्ति,लोरियां सुनने वाले एवं सुनानेवाले अलग–अलग होतेहैं, इसलिए गीत, कहानी, कथा, गाथा आदि कई रूपोंमें मिलते हैं। गीत एवं कहानियां ज्ञानवर्धक हास्यपूर्ण,मनोरंजक तथा उपदेशात्मक होते हैं।

संताली लोक कथा में राजा रानी, भूत प्रेत, देवदानव, पशु पक्षी, आदि मुख्य रूप प्रतीक के रूप मेंसामने आते है। संताली लोक कथाओं में जाति कथा,प्रतीक कथा, देव कथा, गोत्र कथा, परीकथा आदि है।

लोक गाथा में धर्म गाथा एवं वीरगाथा पाये जातेहै। गाथा प्रायः गेय होते है। इनके लोक जीवन में कईतरह के पौराणिक मिथ पाये जाते है। इसमें से वतत्वशास्त्रीय मिथ, आनुश्ठानिक मिथ, सामाजिक मिथ,आख्यान मिथ तथा जादुई मिथ आदि हैं।

संताली लोक गीत, विभिन्न पर्वत्योहार में गाएजाते हैं। इनके गीत में धर्म, समाज तथा साहित्य कीदृष्टि से अनेक महत्त्वपूर्ण हैं। गीत में काव्य के सभीतत्व विद्यमान हैं। इनके गीत का विभाजन अवसर,मौसम, राग के आधार पर किया जा सकता है। लोकगीत में आनुश्ठानिक गीत, पर्वगीत, मेला–यात्रा गीत,संस्कार गीत, आदि है।

संताली लोक साहित्य में अन्य विधाएं जैसे लोकोक्ति,मुहावरे तथा बुझावल का भी प्रचुर भंडार है।लिखित संताली साहित्य सन् 1854 ई. से शुरूहोता है। सन् 1854 ई. में संताली भाषा के महाकवि,धर्मविद, मांझी रामदास टुडू रासिका डी.लिट् का जन्मकाल है। संताली साहित्य के आदि कवि मांझी रामदासटुडू रासिका की रचना खेरवाड़ बोंसो धोरोम पुथीमहाकाव्य सन् 1882 ई. में प्रकाशित हुई। इसमें संतालीगीति काव्य तथा धर्म गाथा आदि सम्मिलित है।

संताली भाषा साहित्य के विकास में अनेक विद्वानोंने अपना–अपना योगदान दिया है। जब ईसाई मिशनरियोंको धर्म प्रचार–प्रसार के लिए भाषा सीखना आवश्यक। हो गया, तब उन्होंने संताली शब्द कोश एवं संतालीव्याकरण का निर्माण अंग्रेजी–संताली के माध्यम सेकिया।

सबसे पहले जारमिया फिलिप्स ने एन इन्ट्रोडक्शनटू दी संताली लैंग्वेजः सन् 1852 ई. में व्याकरणपुस्तक उड़ीसा से, रिव.इ.एल. पाकसले ने ए वोकेब्युलरीआफ संताली सन 1878 ई. में, रिव.एफ.टी. कोल नेसंताली अंगरेजी डिक्शनरी सन 1899 ई. में, रिव.ई.जी.मेन ने संताली एण्ड दी संताली सन् 1868 ई. में, रिव.पी.ओ. बोडिंग ने मैटिरियल फोर संताली ग्रामर सन1890 ई. में, पुस्तक प्रकाशित किये है। सन् 1890 ई.में

पेड़ा होड़ तथा होड़ होपोन रेन पेड़ा प्रथम संतालीभाषा की पत्रिका प्रकाशित किया। किन्तु इस पत्रिकामें ईसाई धर्म प्रचार प्रसार से सम्बन्धित गीत, कथा,कहानी का समावेश था। पी. ओ. बोडिंग ने 1925 ई.से 1929 ई. तक कई पुस्तकें प्रकाशित किये। सबसेमहत्त्वपूर्ण कार्य शब्दकोश, व्याकरण एवं लोक कथापर पुस्तकें प्रकाशित की। इनके अलावे सी. एच.बोम्पास, अंड्रे केम्पवैल आदि ने भी पुस्तकें प्रकाशितकिये हैं। उपर्युक्त पुस्तक प्रकाशित करने में सबसे महत्त्वपूर्ण व्यक्ति कोलयाण गुरू, जुगिया गुरू एवंदेवा हांसदाः की भूमिका सराहनीय है।

देशी लेखकों द्वारा डा. डोमन साहू समीर लिखितसंताली प्रवेशिका 1951 ई. में, केवलराम सोरेन लिखितसंताली शब्द कोश 1960 ई. में, ब्रज बिहारी कुमारलिखित हिन्दी संताली स्वयं शिक्षक सन् 1980 ई में.भागवत मुर्मू ठाकुर लिखित हिन्दी संताली शिक्षक1982 ई. में. डा केसी. टुडू लिखित संताली पारसीउनुरूम सन् 2005 ई. में प्रकाशित हुई है। इनकेअलावे संताली विद्वानों ने मुहावरे, लोकोक्तियां, कुदुमआदि पुस्तकों का भी प्रकाशन किया है।

संताली लोकगीत, कथा, कहानी का प्रचार प्रसारदेशी साहित्यकारों द्वारा भी हुई है। उसमें सबसे पहलेसर जॉर्ज आर्चर ने सन् 1945 ई. में होड़ सेरेळ संतालीलोक गीत, सन् 1944 ई. में पास्टर स्टेफन चांद मुरमूकी ग्राम कहानी, लोक कथा पुस्तक प्रकाशित हुई।इसके बाद लगातार लोक कवियों ने सताली लोकगीत संकलित कर प्रकाशित किये, जो निम्नवत हैनायके मंगल चांद सोरेन दांसाय 1945- भागवत मुरमूठाकुर दोड, सेरेळ 1963] गोमस्ता प्रसाद सोरेन आखड़ाथुती 1965] के. सी. टुडू सेरेळ विंडा 1972] नुनकूसोरेन काराम सेरेळ 1980] केवल राम सोरेन मांझीछाटका 1981] वलराम टुडू वाहा सेरळ 1985] बीरबलएवं हरिहर हांसदाः सम्पादित संताली लोकगीत, डा.घानेश्वर मांझी लिठुर आड़ाड. 2009] प्रकाशित हुआ।इनके अलावे अनेक साहित्यकारों ने लोकगीत पुस्तकेंप्रकाशित किये है।

संताली लोक कथाओं का संकलन एवं प्रसारमध्यकाल से ही प्रारम्भ हुआ है। सबसे पहले रिव. सी.एच. बोम्पास ने सन् 1909 ई. में फोकलोर ऑफ दासंताल परगना पुस्तक प्रकाशित करायी। इसमें अंगरेजीअनुदित 185 लोक कथाएं हैं। मंगल चन्द्र सोरेन लिखितजोम सीम बिनती लिटा 1943] हिकिम हांसदाः लाईचेपेद 1967] डा. राम चन्द्र मुरमू तेतेद तुमाल 1980]भागवत मुरमू संकलित संताली लोक कथाएं 1982]साधुराम चांद मुरमू इसरोड़ 1997] आदि पुस्तकें प्रकाशितहुई। संताली मुहावरे, पहेलियां तथा लोकोक्तियों कीकई पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं। स्टेफन एच. मुरमू कीहोड़ कुदुम पुथी 1944] धिरेन्द्र नाथ वास्के की संतालीमेनकथा आर भेनता काथा को 1988] चरण कर्णलियासकी भेनता झोला 1999 प्रकाशित हुई है।

संताली शिष्ट साहित्य :– संताली शिष्ट साहित्य का आरंभ मध्यकाल सेहुआ है। शिष्ट साहित्य के अन्तर्गत आधुनिक कवियोंतथा लेखको द्वारा रचित साहित्य है। इसमें नाटक, कहानी, कविता, उपन्यास आदि साहित्य विधा आतेहैं। संताली नाटक साहित्य पांच दशकों से लिखे एवंखेले जाते हैं। संताली साहित्य की प्रगति काप्रतिनिधित्व अधिक से अधिक नाटक ही कर रहे हैं।संताली नाटक की भाषा, शैली तथा कथोपकथन उच्चकोटि की है, जिससे दर्शक मंत्र मुग्ध हो जाते हैं।गुरुगोमके रघुनाथ मुरमू लिखित विदू चांदान 1942 ई.में, खेरवाड़ बीर 1952 ई.. साम सुन्दर हेम्ब्रम लिखितछोतोर पति किस्कू रापाज 1948- :प नारायण लिखितआले आतू 1952] के. सी. टुडू लिखित जुरी खातिर,ठाकुर मनिन्द्र हांसदा लिखित बादोली कोयडा 1980]ोरवाल सोरेन लिखित थारी दाका रे मेत दाः 2000-के अलावा अनेक नाटक पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं। येनाटक ऐतिहासिक, धर्मिक, सामाजिक तथा सांस्कृतिकपृष्ठभूमि पर आधारित हैं।

संताली उपन्यास का लेखन मध्यकाल में ही आरम्भहुआ है। सबसे पहला उपन्यास सन् 1948 ई. में आर.आर. किस्कू रापाज अनुदित हाडमावाः आतू प्रकाशितहुआ। पास्टर के, किस्कू अनुदित वाहा डालवाः सन्1969 ई. प्रकाशित हुआ। सी. मुरमू लिखित मानूमाती1973 ई. में, के. सी. हेम्ब्रम लिखित तोपाः तोनोल 1989ई. में प्रकाशित हुई है।

संताली कहानी का लेखन सन् 1942 ई. से होताहै। बालकिशोर बास्के लिखित कुकमू 1952] निरमल बी.के. सोरेन सम्पादित गाथाव माला 1975] डोमन साहूसमीर सम्पादित मायाजाल 1978] सारदा प्रसाद किस्कूखेपा लिखित सोलोम लोटोम 1988] कलेन्द्र नाथ नामाण्डीलिखित आरसी 1994] आदित्य मित्र संताली ळुत मारसाल1995] सोभा नाथ बेसरा लिखित पे जोड़ काहनी 1997]में प्रकाशित हुई।

संताली निवन्ध के क्षेत्र में भी अनेक पुस्तकें प्रकाशितहुई है। बाबू लाल मुरमू आदिवासी लिखित संताली ओनोल 1977] डमन हांसदाः लिखित इळ दो ओकोय 1985]सारदा प्रसाद किस्कू लिखित जुड़ासी ओनोल माला 1994आदि पुस्तकें प्रकाशित हुई है। संताली निबन्ध से सम्बन्धितलगभग 1200 पुस्तकें प्रकाशित हुई है।

संताली काव्य साहित्य का उदभव मध्यकाल सेहुआ है। संताली भाशा के प्रथम शिष्ट काव्य सन् 1936 ई. में पाउल जुझार सोरेन रचित ओनोड़हें बाहाडालवाः है। इसके बाद पंचानन मारडी का सेरेळ इता1947] ठाकुर प्रसाद मुरमू का एभेन आड़ाड. 1951]गोरा चांद टुडू का चांद माला 1953] शारदा प्रसादकिस्कू का कुहुबाउ 1960] साकिला सोरेन का लाःडाहार1962] हरिहर हांसदाः का तिरयो तेताड. 1978] लक्ष्मीनारायण मुरमू का जेरेत दिवहा 1978] नारयण सोरेनका किरतन काली 1981 के. सी. टुडू सम्पादित संतालीपद्य संग्रह 1984 बासुदेव बेसरा का बिडराव 1988 प्रकाशित हुई है। काव्य साहित्य लगभग 5000 पुस्तकेंप्रकाशित हुई है।

संताली पत्र पत्रिकाओं के क्षेत्र में लगभग 200 पत्रिकाएं विभिन्न क्षेत्र से बंगला. रोमन, देवनागरी,ओलचिकि लिपि में प्रकाशित हो रही है। पत्रिका साहित्यकी शुरूवात 18 वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध से होती है।इसमें से अधिकतर पत्र पत्रिकाएं 4 से 10 अंक निकलनेके बाद ही लेखक, पाठक तथा अर्थाभाव के कारण बंदहो गई है। अब होड़ सोम्बद 58 वर्ष, पश्चिम बंगाल 36 वर्ष, सिली 25 वर्ष तथा एमेन साकवा 23 वर्ष सेलगातार प्रकाशित हो रही है।

संताली आठवीं अनुसूची में

1. भारतीय गणराज्य के संविधान की आठवीं अनुसूची के अन्तर्गत कई भाषा सम्मिलित हैं। संताली भाषा साहित्य के इतिहास में 22 दिसम्बर 2003 स्वर्ण अक्षरों में लिखा जाता है। इसी दिन संसद में स्वीकृति दी गयी थी। संविधान के आठवीं अनुसूची में शामिल करने के लिए सौंवा संशोधन विधेयक 2003 प्रस्तुत किया तथा सर्व सम्मति से परित किया गया। इसके बाद भारत के राष्ट्रपति ने 07 जनवरी, 2004 को विभाग से एक सम्मत पत्र जारी किया। इस प्रकार 07 जनवरी 2004 से आठवीं अनुसूची में सम्मिलित हो गयी तथा सरकारी राजकाज में संताली भाषा को मान्यता मिल गई। मान्यता मिलने के बाद संघ लोक सेवा आयोग, साहित्य अकादमी, विश्वविद्यालय आदि संस्थाओं से काम काज धीमी गति से हो रही है। यू. जी. सी. नेट एवं, जे आर एफ. में संताली साहित्य विषय कोड तक सम्मिलित नहीं हो पाया है।

मान्यता मिलने के बाद संघ लोक सेवा आयोग, साहित्य अकादमी, विष्वविद्यालय आदि संस्थाओं से काम काज धीमी गति से हो रही है। यू. जी. सी. नेट एवं जे. आर. एफ. में संताली साहित्य विशय कोड तक सम्मिलित नहीं हो पाया है।

संदर्भसूची :–

1. टुडू, डॉ. कृष्ण चन्द्र, सानताड़ी होड़ सॉवहेंत, संताली लोक साहित्य, संतालों का उद्‌भव और विकास, पृ.–1
2. तिवारी, डॉ. भोलानाथ, भाषा विज्ञान, प्रवेश, पृ.–1
3. टुडू, डॉ. कृष्ण चन्द्र, सानताड़ी सॉवहेंत रेनाः ओमोनोम आर हारा, संताली साहित्य के उद्‌भव और विकास, संताली साहित्य का परिचय, पृ.–1
4. अंसारी, डॉ. परवीन निज़ाम, लोक साहित्य के विविध आयाम, लोक साहित्य की परिभाषा तथा विशेषताएँ, पृ. –7